(4) अनुमान

अनुमान न्याय दर्शन का दूसरा प्रमाण है।

- प्रत्यक्ष के आधार पर अप्रत्यक्ष ज्ञान को अनुमान कहते हैं।

अनु + मान
↓ पीछे/बाद में ↓ ज्ञान

न्यायसूत्र — 'तत्पूर्वकमनुमानं' कह कर अनुमान को परिभाषित किया है।

- अनुमान में तीन पद होते हैं —

(i) पक्ष — जिसमें सिद्ध करना है उसे पक्ष कहते हैं

(ii) हेतु — जिसके द्वारा सिद्ध करना है उसे हेतु कहते हैं

(iii) साध्य — जिस वस्तु को सिद्ध करना है उसे साध्य कहते हैं

Ex — जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ आग है।
पर्वत पर धुआँ है
∴ पर्वत पर आग है

स्वार्थानुमान — 3	
पर्वत	पक्ष
धुआँ	हेतु
आग	साध्य

परार्थानुमान — 5	
प्रतिज्ञा	पर्वत पर आग है।
हेतु	क्योंकि वहाँ धुआँ है
उदाहरण	जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ आग है
उपनय	पर्वत पर धुआँ है
निगमन	इसलिए पर्वत पर आग है।

(5) अनुमान का वर्गीकरण

प्रयोजन के आधार पर — अनुमान
→ स्वार्थानुमान
→ परार्थानुमान

स्वार्थानुमान — जब अपने लिए अनुमान किया जाता है। स्वार्थानुमान में तीन वाक्यों की आवश्यकता होती है।
पक्ष — हेतु — साध्य

परार्थानुमान — जब दूसरे की शंका दूर करने के लिए अनुमान किया जाता है। इसमें पाँच वाक्यों की आवश्यकता होती है।
प्रतिज्ञा — हेतु — उदाहरण — उपनय — निगमन

लिंग = हेतु = धुआँ
लिंगि = साध्य = आग

लिंगपरामर्श — जहाँ लिंग और लिंगि / हेतु और साध्य / धुआँ और आग दोनों की विद्यमानता रहती है। वहाँ अनुमान नहीं होता। Ex- यह रसोई घर जहाँ भी हमने लिंग और लिंगि या धुआँ और आग के सहचर्य नियम को देखा है। अनुमान का विषय नहीं अपितु प्रत्यक्ष का विषय है। ध्यान रखना है कि अनुमान सिर्फ वहीं होता है जहाँ केवल लिंग / हेतु का प्रत्यक्ष होता है, लिंगि / आग का नहीं। यदि दूरस्थ पर्वत पर हम धुआँ उठता देखते हैं तो वह हमारे अनुमान का विषय बनता है। वहाँ हमें धुआँ प्रत्यक्ष दिखाई देता है आग नहीं। हम धुएँ को देखकर आग का अनुमान करते हैं। धुएँ को देखकर ही हमें यह व्याप्ति याद आई कि

Ex — जहाँ-जहाँ धुआँ होता है वहाँ-वहाँ आग होती है।
पर्वत पर धुआँ है
∴ पर्वत पर आग है

यह अनुमान का विषय है और यही लिंगपरामर्श है।

⇒ अनुमान ऐसा ज्ञान होता है जिसके पूर्व कोई ज्ञान आता है। अर्थात 'तत्पूर्वकम्' दो प्रत्यक्षों का द्योतक है। ये दो प्रत्यक्ष हैं —

(1) लिंग- लिंगि संबंध-प्रत्यक्ष
(2) लिंग-प्रत्यक्ष

Ex- धुएँ का ज्ञान होने पर आग का ज्ञान होना

or

* लिंग के आधार पर लिंगि का ज्ञान या लिंगि के आधार पर लिंग का ज्ञान लिंगपरामर्श कहलाता है।

लिंग / हेतु / धुआँ / साधन

लिंगि / साध्य / आग

प्राचीन न्याय के अनुसार अनुमान तीन प्रकार के होते हैं:

(i) पूर्ववत अनुमान – जिसमें ज्ञात कारण को देख कर अज्ञात कार्य का अनुमान लगाया जाता है
Ex – बादल को देख कर वर्षा का अनुमान

(ii) शेषवत अनुमान – जिसमें ज्ञात कार्य को देख कर अज्ञात कारण का अनुमान लगाना।
Ex – नदी में मटमैला पानी देख कर वर्षा का अनुमान किया जाना।

(iii) सामान्यतोदृष्ट – दो वस्तुओं को साथ-साथ देखने पर एक को देख कर दूसरे का अनुमान करना
Ex – बगुला और जलाशय का अनुमान

नव्यन्याय के अनुसार अनुमान तीन होते हैं:

(i) केवलान्वयी – जब व्याप्ति की स्थापना भावात्मक उदाहरणों से होती है।
Ex – एक की उपस्थिति पर अन्य की उपस्थिति

(ii) केवल व्यतिरेकी – जब व्याप्ति की स्थापना निषेधात्मक उदाहरणों द्वारा होती है।

(iii) अन्वय-व्यतिरेकी – जिस अनुमान में व्याप्ति की स्थापना अन्वय एवं व्यतिरेक दोनों विधियों से किया जाता है।

(6) व्याप्ति – भारतीय दर्शन में चार्वाक को छोड़कर सभी स्वीकारते हैं। व्याप्य एवं व्यापक का स्वाभाविक सम्बन्ध है।

व्याप्य – धुआँ
व्यापक – आग

– अनुमान का प्राण व्याप्ति है।

→ दो वस्तुओं के अविनाभाव या नियतसाहचर्य सम्बन्ध को व्याप्ति कहते हैं। or

→ हेतु + साध्य के व्यापक सम्बन्ध को व्याप्ति कहते हो।

→ व्याप्ति की स्थापना छः विधियों द्वारा की जाती है।
↘ व्याप्तिग्रहोपाय

1. अन्वय, व्यतिरेक, व्यभिचाराग्रह, उपाधिनिरास, तर्क और सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष

*✓ व्याप्ति अनुमान का तार्किक आधार है जबकि 'पक्षधर्मता' ज्ञान का मनोवैज्ञानिक आधार है।

* व्याप्तिग्रहोपाय – अर्थात् व्याप्ति ग्रहण के उपाय या साधन – (6)

(7) हेत्वाभास — अनुमान के दोष को हेत्वाभास कहते हैं।
यह पाँच प्रकार के होते हैं
सव्यभिचार, विरुद्ध, सत्प्रतिपक्ष, असिद्ध और बाधित

8. उपमान

पूर्वानुभूत वस्तु के सादृश्य होने के कारण जहाँ किसी नई वस्तु का ज्ञान हो उसे उपमिति कहते हैं उसके ज्ञान को उपमान प्रमाण कहते हैं।

अथवा

– जिसका ज्ञान उपमा के द्वारा प्राप्त होता है उपमान कहलाता है

* बौद्ध उपमान का अन्तर्भाव - प्रत्यक्ष में करते हैं
सांख्य + वैशेषिक - इसे अनुमान में अन्तर्भुक्त मानते हैं

जैन - इसे प्रत्यभिज्ञा के अन्तर्गत स्वीकार करते हैं।
– मीमांसा इसे प्रमाण मानते हैं किन्तु उनकी उपमान की व्याख्या न्यायकृत व्याख्या से भिन्न है।
– नैयायिकों के अनुसार उपमान एक मिश्रित प्रक्रिया है।

* न्याय में - उपमान को संज्ञा-संज्ञि-सम्बन्धज्ञान कहा गया है

(9) शब्द

– शब्द प्रमाण न्याय का चौथा प्रमाण है।
– किसी विश्वस्त व्यक्ति / आप्तवचन के कथनानुसार जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे शब्द प्रमाण कहते हैं।

→ आप्तपुरुष परमात्मा या ईश्वर और जीवात्मा रूप से द्विविध है

शब्द प्रमाण दो प्रकार के होते हैं —

(i) वैदिक — वेद ईश्वर द्वारा उच्चरित
(ii) लौकिक — साधारण मनुष्य के वचन